

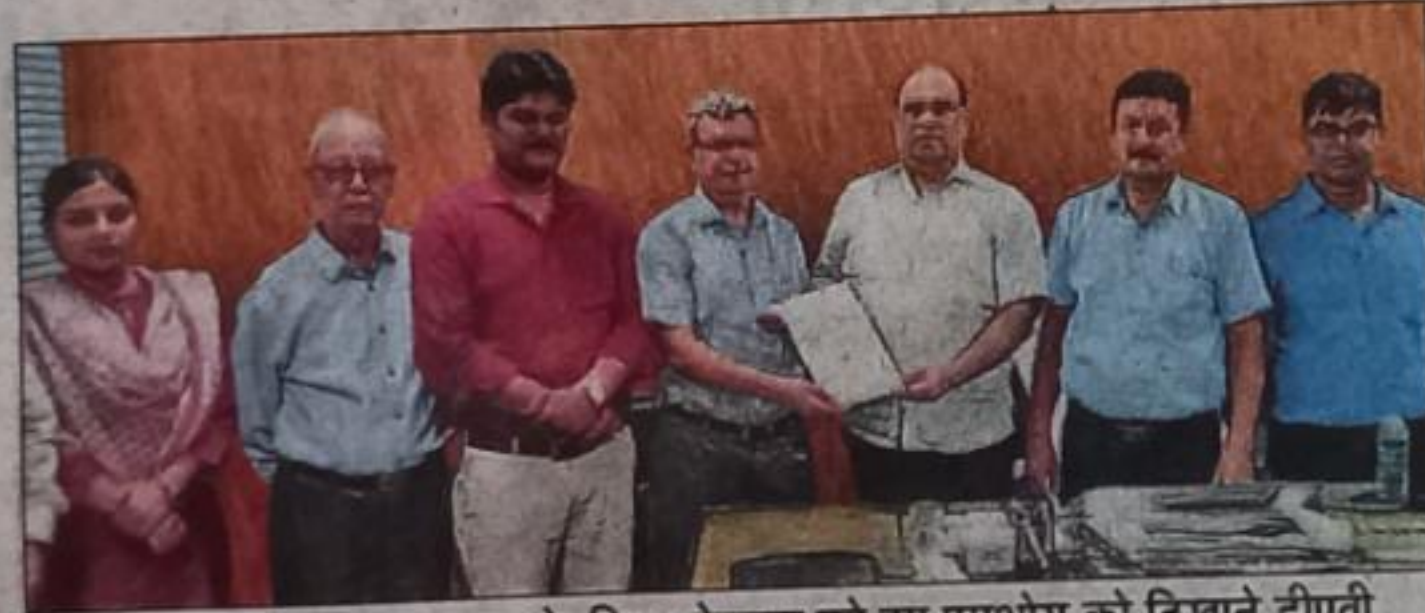
# चंदौली की शैलकलाओं पर अध्ययन करेंगे छात्र

## समझौता

- डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता
- रॉक आर्ट के विभिन्न पहलुओं पर मिलेंगी नई जानकारीयां

वाराणसी, वरिष्ठ संवाददाता। चंदौली जिले में शैलकला (रॉक आर्ट) पर डीएवी पीजी कॉलेज के छात्र और शिक्षक विशेषज्ञों के साथ अध्ययन करेंगे। इस सहमति पत्र पर सोमवार को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। रॉक आर्ट का सर्वेक्षण और अभिलेखन कार्य 14 से 23 सितंबर तक चलेगा।

सर्वेक्षण में डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साथ बसंत महिला महाविद्यालय राजघाट के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय महाविद्यालय के प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव,



शैलकला पर संयुक्त अध्ययन के लिए सोमवार को हुए एमओयू को दिखाते डीएवी पीजी कॉलेज प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत। • हिन्दुस्तान

बड़ोदरा गुजरात से आए पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान हुई कार्यशाला में पुराविद

एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है। इसलिए उसके संरक्षण एवं अभिलेखन की आवश्यकता है। दुनिया भर में रॉक आर्ट के लिए आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के

बाद भारत का नंबर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के विंध्य पहाड़ियों पर तथा उत्तर प्रदेश की कैमूर की पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है।

भारत में मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त दिखलाई पड़ रहे हैं। डॉ. रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमें शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह ने किया। संचालन डॉ. ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रो. प्रशांत कश्यप, डॉ. मिश्रीलाल, डॉ. पारुल जैन, डॉ. दीपक शर्मा सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

वाराणसी  
2022 में  
है। कुल  
सिंह 21  
अवनीश  
ने भी स

जेईई



वरदान  
वाराणसी  
शानदार  
कनिष्क  
956वां  
इण्डिया



# DAV PG College, IGNCA sign MoU

PIONEER NEWS SERVICE ■ VARANASI

A Memorandum of Understanding (MoU) was signed between DAV PG College and Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi here on Monday for the special study of rock art in Chandauli district. The MoU was signed by Dr Satyadev Singh, Principal of the college and Dr Ramakar Pant of IGNCA.

Under this agreement, field survey and recording of rock art will be done at different places of Chandauli district from September 14 to 23 by the joint team comprising the experts of DAV PG College and IGNCA along with the field coordinators of the Vasanta College for Women, Rajghat (Varanasi). At the time of signing the MoU, the college's secretary and manager Ajit Kumar Singh Yadav, eminent archaeologist and rock art expert Prof VH Sonawane from Vadodara, Gujarat and Dr Mukesh Kumar Singh, Head of the Department of Ancient Indian History, Culture and Archeology were also present.

While addressing the workshop organised on this



DAV PG College and IGNCA exchanging an MoU for study on rock art in Varanasi on Monday.

Pioneer

occasion, archaeologist and rock art expert Prof VH Sonawane said that the rock art is now in the era of erosion, hence there is a need for its conservation and recording. Three countries around the world are famous for rock art, India comes third after Australia and Africa. He said that apart from Kerala, Ladakh, Gujarat, Assam, Manipur, there is abundance of rock art on

Vindhya hills of Madhya Pradesh and Kaimur hills of Uttar Pradesh. In the rock art found in India, abundance is visible only for the propagation of Buddhism. Dr Ramakar Pant said that if we want to understand every aspect of human civilization, then we have to study rock art deeply.

Earlier, the guests were welcomed by the head of the department, Dr Mukesh

Kumar Singh by presenting bouquets, mementos and angavastram. Dr Omprakash Kumar conducted the proceedings while the vote of thanks was proposed by Dr Manisha Singh.

The workshop was also attended by Prof Prashant Kashyap, Dr Mishrilal, Dr Parul Jain, Dr Deepak Sharma and a good number of students.



गया है। दस दिसंबर को सत्र 2019-

## चंदौली की शैल

## कलाओं पर अध्ययन करेंगे डीएवी के छात्र

वाराणसी। डीएवी पीजी कॉलेज व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली के बीच सोमवार को चंदौली की शैल कला के अध्ययन के लेकर एमओयू हुआ। समझौते के तहत डीएवी के शिक्षकों के साथ छात्र-छात्राएं चंदौली जिले के विभिन्न शैल कलाओं का सर्वेक्षण कर उनके बारे में अध्ययन करेंगे। समझौते पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के डॉ. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। 14 से 23 सितंबर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर पाए जाने वाले शैल कलाओं का क्षेत्रीय सर्वेक्षण और अभिलेखन किया जाएगा। इसमें वसंत महिला महाविद्यालय फील्ड समन्वयक के रूप में सहयोग करेगा। ब्यूरो



# शैलकला के अध्ययन के लिए डीएवी और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता

चंदौली जिले में शैलकला (रॉक आर्ट)के विशेष अध्ययन के लिए डीएवी पीजी कॉलेज एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, (नई दिल्ली) के मध्य सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किया गया। एमओयू पर महाविद्यालय के प्राचार्य डाक्टर सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉक्टर रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत आगामी १४ सितम्बर से २३ सितम्बर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर शैलकलाओं का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया जाएगा। इसमें डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के अलावा बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट के फ़ील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय

महाविद्यालय के मंत्रीध्रुबबंधक अजीत कुमार सिंह यादव, बड़ोदरा, (गुजरात) से आये प्रख्यात पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच सोनावने एवं



प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डॉक्टर मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

वहीं इस अवसर पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए

पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच. सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है इसलिए उसके संरक्षण एवं अभिलेखन की

आवश्यकता है। दुनिया भर में तीन देश रॉक आर्ट के लिए प्रसिद्ध हैं उनमें आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बाद भारत तीसरे नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के

विन्ध्य की पहाड़ियों पर तथा उत्तर प्रदेश के कैमूर की पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है। भारत में मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त ही दिखलाई पड़ रहे हैं। डाक्टर रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमें शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉक्टर मुकेश कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर किया। संचालन डॉक्टर ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रोफेसर प्रशांत कश्यप, डॉक्टर मिश्रीलाल, डॉक्टर पारुल जैन, डॉक्टर दीपक शर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।



# शैलकलाओं के अध्ययन के लिए डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में हुआ समझौता

वाराणसी, 11। चंदौली जिले में शैलकला रॉक आर्ट के विशेष अध्ययन के लिए डीएवी पीजी कॉलेज एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के मध्य सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। एमओयू पर महाविद्यालय के प्राचार्य

दिल्ली के अलावा बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट के फील्ड समन्वयक शामिल होंगे। एमओयू पर हस्ताक्षर के समय महाविद्यालय के मंत्री/प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव, बड़ोदरा, गुजरात से आये प्रख्यात पुराविद एवं शैलकला

अभिलेखन की आवश्यकता है। दुनिया भर में तीन देश रॉक आर्ट के लिए प्रसिद्ध हैं उनमें आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के बाद भारत तीसरे नंबर पर आता है। उन्होंने बताया कि केरल, लद्दाख, गुजरात, असम, मणिपुर के अलावा मध्य प्रदेश के विंध्य पहाड़ियों पर तथा उत्तर प्रदेश की कैमूर की पहाड़ियों पर रॉक आर्ट की प्रचुरता मिलती है। भारत में मिले रॉक आर्ट में बहुतायत बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के निमित्त ही दिखलाई पड़ रहे हैं। डॉ. रमाकर पंत ने कहा कि मानव सभ्यता के प्रत्येक पहलुओं को समझना है तो हमें शैलकलाओं का गूढ़ अध्ययन करना होगा। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर किया। संचालन डॉ. ओमप्रकाश कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनीषा सिंह ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रो. प्रशांत कश्यप, डॉ. मिश्रीलाल, डॉ. पारुल जैन, डॉ. दीपक शर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में छात्र - छात्राएं उपस्थित रहे।



डॉ. सत्यदेव सिंह एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकर पंत ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत आगामी 14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक चंदौली जनपद के विभिन्न स्थानों पर शैलकलाओं का क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया जाएगा। इसमें डीएवी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई

विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच सोनावने एवं प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। वहीं इस अवसर पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए पुराविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच. सोनावने ने कहा कि रॉक आर्ट अब क्षरण के दौर में है इसलिए उसके संरक्षण एवं



विश्वकामा भी समाराह म माजूद थे।

## शैलकला पर अध्ययन के लिए आज होगा समझौते पर हस्ताक्षर

**वाराणसी।** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली एवं डीएवी पीजी कॉलेज के मध्य शैलकला अध्ययन के लिए एक समझौता पर आज हस्ताक्षर किया जाएगा। चंदौली जिले में शैलकला अध्ययन एवं उनके अभिलेखन के लिए यह समझौता किया जाएगा जिसमें बसंत महिला महाविद्यालय राजघाट भी सम्मिलित होगा। इस अवसर पर आज 12 सितम्बर को डीएवी पीजी कॉलेज में “चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास” विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वीएच सोनवाने, एमएस विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह करेंगे। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार सिंह एवं परियोजना अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश कुमार ने दी है।



# शैलकला पर अध्ययनके लिए आज होगा समझौते पर हस्ताक्षर

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नयी दिल्ली एवं डीएवी पीजी कालेज के बीच शैलकला अध्ययन के लिए एक समझौते पर १२ सितम्बर को हस्ताक्षर किया जायेगा। चंदौली जिले में शैलकला अध्ययन एवं उनके अभिलेखन के लिए यह समझौता किया जायेगा जिसमें बसंत महिला महाविद्यालय, (राजघाट) भी सम्मिलित होगा। इस अवसर पर डीएवी पीजी कालेज में चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद एवं शैलकला विशेषज्ञ प्रोफेसर वी.एच. सोनवाने, (एम.एस. विश्वविद्यालयए बड़ोदरा, गुजरात) एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, (नयी दिल्ली) के आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डाक्टर रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डाक्टर सत्यदेव सिंह करेंगे। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डाक्टर मुकेश कुमार सिंह एवं परियोजना अधिकारी डाक्टर ओम प्रकाश कुमार ने दी है।



## शैलकला पर अध्ययन को एमओयू करेगा डीएवी

वाराणसी। चंदौली में शैलकला अध्ययन और अभिलेखन को लेकर डीएवी कॉलेज ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के साथ एक समझौता करेगा। समझौते में बसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट भी शामिल है। इसी कड़ी में सोमवार को महाविद्यालय में 'चंदौली जिले की शैलकला पर अधिन्यास' विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजित है। जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्वविद और शैलकला विशेषज्ञ प्रो. वीएच सोनवाने, एमएस विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभागाध्यक्ष डॉ. रामाकर पंत का विशिष्ट संबोधन होगा। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सत्यदेव सिंह करेंगे। इसी दौरान समझौते पर हस्ताक्षर भी होगा। यह जानकारी प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरा तथा संस्कृति के विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश सिंह और परियोजना अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश कुमार ने दी है।

यह समझौता दो वर्षों के लिए है।